E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(4): 05-09
Received: 03-01-2023
Accepted: 14-02-2023

अपराजिता मिश्रा
शोध छात्रा इतिहास, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. महेन्द्र मणि द्विवेदी
प्राध्यापक इतिहास, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अपराजिता मिश्रा
शोध छात्रा इतिहास, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

नर्मदा महात्मय का समीक्षात्मक अध्ययन

अपराजिता मिश्रा, डॉ. महेन्द्र मणि द्विवेदी

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i4a.964

सारांश
कल्पान्तस्थाईनी नर्मदा प्रलय काल में भी अक्षय बनी रहती है। स्कंद पुराण के रेवा खण्ड में युधिष्ठिर को नर्मदा माहात्म्य बताते हुए महामुनि मार्कण्डेय जी कहते हैं कि सभी सरिताएं तथा समुद्र प्रलय काल में भी नष्ट हो जाते हैं, केवल नर्मदा ही सातों कल्पों में स्थित रही है। स्कंद पुराण ने प्रारम्भ में ही नर्मदा के लिए वेदगर्भा विशेषण प्रयुक्त किया है।
वेदगर्भा शब्द इंगित करता है कि 'नर्मदा' वेदों की रचना के दौरान वैदिक साहित्य के गर्भ में छिपी थी। साथ ही यदि बहुव्रीहि समास द्वारा वेदगर्भा शब्द का अर्थ निकाला जाए तो ''वेदा गर्भ यस्या सा इति वेदगर्भा'' अर्थात् वेद थे, जिसके गर्भ में, वह वेदगर्भा। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के आदिम साहित्य के स्रोत ऋग्वेद में वर्णित 'सप्त सैंधव[1]' जिस स्थान पर ऋग्वैदिक संस्कृति जन्मी, जो क्षेत्र आर्यों की साधनास्थली था, वह क्षेत्र सिंधु, बिपाशा, शूत्रुद (सप्तजल), विपाशा, झेलम, अक्सीनी (चनाव), परुशणी (रावी) और सरस्वती आदि सात नदियों में युक्त था। सप्त सैधव की नदियों के अन्तर्गत नर्मदा का समावेश नहीं था, जिसका कारण नर्मदा क्षेत्र का सप्त सैधव की सीमा से दूर दक्षिण दिशा में स्थित होना था। प्राचीन वैदिक साहित्य के महत्वपूर्ण ब्राम्हण ग्रंथ शतपथ ब्राम्हण में 'रेवा' या रेवोत्तरसम[2]'' शब्द का प्रयोग मिलता है। वैदिक कोश में इस शब्द से जुड़े कथानक को इस प्रकार उल्लेखित किया गया है–सृंजय वैदिक काल की एक जाति है, इनके मित्र त्रस्त हैं, जो मध्य देश के निवासी थे। सृंजियों ने अपने राजा दुष्ट रीतु पौंसायन को दस पीढ़ियों की परम्परा तोड़कर राज सिंहासन ने हटा दिया था और उनके मंत्री रेवोत्तर पाटव चक्रस्यपति को भी मार भगाया था, किन्तु मंत्री ने कुरु राजा बल्हिक प्रातीप्य के विरोध करने पर भी दृष्टरीतु पौंसायन को फिर से राज गद्दी पर बैठाया था। यहां यह भी बहुत सम्भव है, कुरु राजा ही इस विरोध के मूल में रहा हो। इस आख्यान में रेवोत्तर या रेवोत्तरसम व्यक्तिवाचक संज्ञा है, जिससे मंत्री का नाम, पता चलता है। परंतु 'बेबर' ने रेवोत्तर में प्रयुक्त पूर्वार्ध रेवा को रेवा या नर्मदा माना है। रेवोत्तर का बहुव्रीहि समास करने पर–रेवा है, जिसके उत्तर में अर्थात् रेवा के दक्षिण में रहने वाला। इस तरह रेवोत्तर नामक व्यक्ति जो रेवा के दक्षिण तट या दिशा में रहता था।

कुटशब्दः नर्मदा, महात्मय, रेवा, अमरकंटक

प्रस्तावना
जर्मन ऋतु वैज्ञानिक अल्फ्रेड बेगन ने वर्ष 1912 में सर्वप्रथम नर्मदा अवतरण पर अपनी तथ्यात्मक रिपोर्ट पेश की। डॉ बेगनर ने महादेशीय अपसरण की वास्तविकताओं को प्रमाणित करते हुए कहा था कि विंध्यांचल का दक्षिणी भाग कभी अफ्रीका महाद्वीप का एक भू–भाग था जो अपसरण की प्रक्रिया में अफ्रीका से अलग होकर एशिया महाद्वीप में आकर मिल गया। इस घटना के परिणामस्वरूप दक्षिणी भाग की उच्च सम भूमि का निर्माण हुआ और बीच मे जल की एक रेखा बन गई, जिससे नर्मदा नदी का निर्माण हुआ। इन तथ्यों के आधार पर अध्ययन करते हुए बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट लखनऊ ने पादप जीवाष्मों का गहन परीक्षण किया और पाया कि इन जीवाश्मों में मुख्य रूप से यूकोलिप्टस प्रजाति के वृक्ष हैं और वर्तमान में इस पौधकुल की कुछ प्रजातियां आस्ट्रेलिया में पाई जाती हैं। निश्चित ही यह भू–भाग कभी आस्ट्रेलिया महाद्वीप का ही एक भाग था जो बड़ी प्राकृतिक परिवर्तन की घटना के उपरांत उससे अलग होकर एशिया महाद्वीप में आकर मिल गया। कुछ समय उपरांत पालासुन्दर मण्डला में प्राप्त शंख जीवाश्मो का विश्लेषण करते हुए बीरबल साहनी इन्स्टीट्यूट ने एक नक्शा प्रकाशित किया, जिसमें इस स्थल पर एक महाझील की कल्पना की गई थी[3]।

प्राचीन साहित्य में नर्मदा
सामवेद की स्वर लहरी[4] सामवेद स्वरूपा 'नर्मदा' को वेदों की रचना के समय ष्वेदगर्भाष् माना गया। ऋग्वेद में नर्मदा का उल्लेख नही है मगर अथर्ववेद की एक ऋचा कहती है "ऋचः सामानि छंदासि पुराणं यजुषा सः"[5] अर्थात पुराणों का आविर्भाव ऋक, साम, यजुष, और छंद के साथ ही हुआ था।

इसी प्रकार शतपथ ब्रामण में तो पुरानवांगमय को ही वेद कहा गया है।[6] छान्दोग्य उपनिषद भी पुराणों को वेद कहता है, 'इतिहास पुराणं पञ्चम वेदानाममेसम'[7]। इस तरह पुराणों को वेदों का समकालीन माना जा सकता है। पुराणों की रचनाकाल से नर्मदा महात्म्य में उत्तरोत्तर वृद्धि होती दिखती है। मत्स्य पुराण, पद्म पुराण, ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, मार्कंडेय पुराण, शिव महापुराण, श्रीमद् भागवत महापुराण, अग्नि पुराण, कल्कि पुराण, वामन पुराण, वाराह पुराण, देवी पुराण एवं नारद आदि पुराणों में नर्मदा तथा उसके तीर्थों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है। स्कंद पुराण और वायु पुराण का तो रेवाखंड पूर्णतया नर्मदा को समर्पित है। इसी क्रम में बृहद संहिता एवं वशिष्ठ संहिता में भी नर्मदा महत्व पर विस्तार से वर्णन उपलब्ध है। भारतीय प्राचीन साहित्य के विशिष्ट ग्रंथ शतपथ ब्राह्मण में भी 'रेवा' का उल्लेख मिलता है। लौकिक संस्कृति के आदि महाकाव्य वाल्मीकि रामायण में भी महर्षि वाल्मीकि ने नर्मदा को यथोचित महत्व दिया है।

आदिकवि वाल्मीकि के बाद परवर्ती कवियों में भास, कालिदास, सुवन्धु, राजशेखर, मुरारी, त्रिविक्रम भट्ट, परिमल गुप्त आदि कवियों ने तो नर्मदा को अपनी काव्य कल्पना का आधार ही बनाया है। न केवल संस्कृत साहित्य अपितु प्राकृत में भी नर्मदा पर अनेकों गाथाएं विद्यमान हैं। इतना ही नहीं प्राचीन शिलालेखों, सूक्ति वाक्य एवं सूक्ति ग्रंथों में भी नर्मदा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। महाभारत के बाद उत्तरोत्तर नर्मदा महात्म्य में वृद्धि होती रही और नर्मदा को प्रतिष्ठापूर्ण तीर्थ पद प्राप्त होने के बाद धार्मिक क्षेत्र में जितने भी तीर्थ परक ग्रंथ या निबंध लिखे गए सर्वत्र नर्मदा का यशोगान होता रहा। ऐसी शैली के स्वतंत्र निबंध ग्रंथों में लक्ष्मीधर भट्ट का कृत्य कल्पतरु है जिसकी रचना बारहवीं शताब्दी में हुई। इस ग्रंथ के तीर्थ विवेचन कांड में गंगा के बाद नर्मदा महात्म्य का ही वर्णन है। इसी तरह सत्रहवीं सदी के पूर्वार्ध में आचार्य मित्र मिश्र ने वीर मित्रोदय ग्रंथ की रचना की जिसमें उन्होंने गंगा और यमुना के साथ ही नर्मदा के महत्व का उल्लेख किया है। महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस में रेवा अर्थात नर्मदा का वर्णन मिलता है तो आदि शंकराचार्य द्वारा लिखित नर्मदा अष्टक नर्मदा आराधना का प्रमुख स्रोत माना जाता है। इसी क्रम में नवसाहसांक चरितं, ओंकारनाथ गिरी की नर्मदा कल्पवल्ली, श्री चौतन्य ब्रह्मचारी की नर्मदा रहस्य, प्रभदत्त ब्रह्मचारी की नर्मदा दर्शन, स्वामी मयानंद चेतन द्वारा रचित नर्मदा पंचांग एवं नर्मदा लहरी जैसे तमाम साहित्य नर्मदा महत्त्व से ओतप्रोत है।

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के उत्तरकांड मे विंध्यांचल और नर्मदा का प्रमुख प्रसंग महिष्मति के सम्राट अर्जुन और लंकापति रावण के बीच हुए युद्ध के दौरान आता है।

रामायण[8] में वर्णित कथा के अनुसार ''श्री रामचंद्र जी ने रावण द्वारा किये जा रहे अत्याचारों को सुनने के बाद अचंभित होकर महर्षि अगस्त से पूछा, हे ऋषिवर! उस समय क्या कोई राजा या राजपुरुष ऐसा नहीं था जो रावण को उसके कृत्य का दंड दे सकता था। महर्षि अगस्त ने श्री राम को एक कथा सुनाते हुए कहा कि एक बार राजाओं को प्रताड़ित करता हुआ रावण पृथ्वी पर घूमते–घूमते महिष्मति पुरी पहुंचा। वहां का राजा अर्जुन उस समय अपनी राजधानी से दूर नर्मदा में जल विहार करने गया हुआ था। रावण को जब अर्जुन महिष्मती में नही मिला तो वह भी विंध्यांचल में नर्मदा की ओर चल दिया। हिमालय के समान ऊंचे और कन्दराओं से युक्त विशाल विंध्य पर्वत को देखता हुआ रावण नर्मदा नदी के समीप तट पर पहुंचा। वह पवित्र नदी स्वच्छ पर्वतों पर बहती हुई पश्चिम की ओर बहते हुए समुद्र में गिरती थी। जंगली भैंसे, शेर, जंगली सुअर, भालू और जंगली हांथी जैसे वन्य प्राणी सूर्य की गर्मी से उत्तप्त होकर नर्मदा के जल में घुसकर उसको गंदा कर रहे थे। चक्रवाक, कारण्डव, हंस, जल कुक्कुट और सारस जैसे पक्षी उसे घेरकर हर्षित हो विभिन्न आवाजें कर रहे थे। मन मोहने वाली नर्मदा ने मानव सुंदरी कामिनी की तरह कांति धारण कर ली थी पुष्पित वृक्ष उसके गहने और हंस पंक्ति उसकी करधनी सी नजर आ रही थी। पुष्प राग उसका अंगराग, जल में उठता फेन उसका सफेद पर, स्नान सुख उसका परम सुख और पुष्पित कमल उसके शुभ नेत्र से प्रतीत हो रहे थे।''

महर्षि वाल्मीकि कहते हैं कि नर्मदा के सौंदर्य से मुग्ध रावण अपने पुष्पक विमान से उतरा और नर्मदा स्नान करने के बाद वह अपने मंत्रियों सहित नर्मदा के सुरम्य तट पर बैठ कर विश्राम करने लगा। दशानन रावण ने अपने मंत्रियों से नर्मदा को गंगा की तरह बतलाते हुए प्रशंसा की।

'प्रख्याय नर्मदा सोथ गंगेयमिति रावणः।
नर्मदा दर्शने हर्षमाप्तवान्स दसाननः[9]।।'

अपने मंत्रियों से रावण कहता है कि इंद्र आदि देवताओं के साथ कई युद्धों के कारण जहां तुम लोग भी थके हुए हो वही तुम्हारे शरीर में जगह–जगह रक्त भी चंदन के लेप सा लगा हुआ दिखाई दे रहा है। अतः तुम लोग भी इस सुखदायिनी और कल्याणकारी नर्मदा में स्नान कर लो और अपने पापों से मुक्त हो जाओ[10]। रावण कहता है कि मैं भी अब नर्मदा तट पर महादेव का पूजन करूंगा। रावण के ऐसा कहने पर उसके मंत्रियों प्रहस्त, शुक, सारण, महोदर एवं धूम्राक्ष अन्य राक्षसों के साथ नर्मदा जल में स्नान करते हैं। स्नानोपरांत राक्षसों ने रावण के शिव पूजनार्थ पुष्प एकत्रित किए और साथ लाए शिवलिंग को नर्मदा तट पर रेत में स्थापित किया, जिस समय रावण ने शिव पूजन शुरू किया उसी समय कुछ दूर पर महिष्मति सम्राट अर्जुन जो अपनी रानियों के साथ जलविहार कर रहा था उसने अपनी हजार भुजाओं का बल आजमाने के लिए नर्मदा की तेज धार को रोक दिया, जैसे ही अर्जुन ने नर्मदा का प्रवाह रोका तो नदी में बाढ़ सी आ गई और जल उफन कर तट के ऊपर जा पहुंचा। नदी की धारा भी उल्टी बहने लगी।

परिणामस्वरूप रावण के समीप पूजनार्थ रखी पूजन सामग्री और फूल नर्मदा के जल में बह गए।[11] कुछ समय उपरांत नर्मदा का जल पुनः शांतभाव से ज्यों का त्यों बहने लगा। इस घटना से हतप्रभ होकर रावण ने शुक और सारण को नदी की बाढ़ का कारण जानने के लिए पश्चिम की ओर भेजा। राक्षस मंत्रियों ने कुछ दूर जाने के बाद एक जगह देखा कि एक पुरुष नर्मदा जल में कुछ स्त्रियों के साथ विहार कर रहा है और उसने नर्मदा नदी के जल को रोक रखा है। दोनों मंत्रियों ने जैसे ही इस बात की जानकारी रावण को दी वह वहां पहुंचा और उसका अर्जुन के साथ उसका भीषण युद्ध हुआ।

वाल्मीकि रामायण के बाद महाभारत काल मे नर्मदा पूर्व से अधिक लोकप्रिय हो चुकी थी। वर्तमान में उपलब्ध विश्व के सबसे लंबे और प्राचीनतम साहित्यग्रन्थ और महाकाव्य 'महाभारत' के शांति पर्व में पांडवों की विशाल और बलशाली सेना की उपमा नर्मदा से करते हुए महर्षि व्यास लिखते हैं कि 'महानदी' नर्मदा जैसे ऋक्षवान पर्वत के आगे और पीछे बहती है उसी तरह वह बड़े बल वाली ताकतवर सेना भी पांडवों के रथों के आगे और पीछे चल रही थी।

महाभारत के ही वन पर्व में महाऋषि धौम्य धर्मराज युधिष्ठिर को भारत के पश्चिम दिशा में स्थित पुण्य तीर्थों एवं प्रमुख देवालयों की जानकारी देते हुए कहते हैं कि, पश्चिम दिशा में पुण्यमयी नर्मदा नदी प्रवाहित होती है। इसकी धारा पूर्व दिशा से पश्चिम दिशा की ओर है।[12] नर्मदा के तट पर प्रियंक और आम के वृक्षों का सघन वन है। बाँस (बेंत) तथा फल वाले वृक्षों की श्रेणियां भी नर्मदा की शोभा बढ़ाती है। तीनो लोकों में जितने भी पुण्य तीर्थ,

मंदिर, नदी, वन अथवा पर्वत हैं, उन सभी के साथ ब्रह्मा आदि देवगण, सिद्ध पुरुष, ऋषि, चारण एवं पुण्यांत्माओं के समूह है, वे सभी नर्मदा के जल में स्नान के लिए आया करते हैं। नर्मदा तट पर ही मुनि विश्रवा का पवित्र आश्रम है, जहां धनदेव कुबेर का जन्म हुआ था। वैदूरी शिखर नामक मंगलमय पर्वत भी नर्मदा नदी के तट पर स्थित है, जहां हरे–हरे पत्तों से सुशोभित सदाफल और फूलों से युक्त वृक्ष शोभा पाते हैं। उस पर्वत के शिखर पर एक सुंदर सरोवर भी है जिसमें हमेशा कमल खिले रहते हैं। सभी देवता और गंधर्व भी उस पुण्य तीर्थ का सेवन करते हैं[13]।

महाभारत के ही भीष्म पर्व[14] में नर्मदा का नाम गोदावरी के साथ आता है । भारत वर्ष के वर्णन के दौरान पहले कुल पर्वतों का उल्लेख है और फिर नर्मदा समेत प्रमुख पुण्यमयी नदियों का नाम बताते हुए कहा गया है कि, भारतवर्ष में महेंद्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान, ऋक्षवान, विंध्य और पारियात्र ये सात कुल पर्वत कहलाते हैं। इन पर्वतों के समीप आर्य, मलेक्ष और दूसरी मिश्र जातियों के मनुष्य रहते हैं। ये सभी मनुष्य गंगा, सिंधु, सरस्वती, गोदावरी और नर्मदा आदि महानदियों के जल को पीते हैं।

इस तरह स्पष्ट होता है कि महाभारत काल तक नर्मदा जहां लोकप्रिय हो चुकी थी वही नर्मदा को तीर्थ रूप में भी मान्यता मिल चुकी थी। इस काल मे नर्मदा का महत्व एक तपोस्थली के रूप में स्थापित हो चुका था। अमरकंटक पर्वत की कन्दराओं और नर्मदा तट में विभिन्न ऋषियों में आश्रमो का निर्माण हो चुका था। ऋषिगण और तपस्वी विभिन तीर्थो का भ्रमण करने के बाद नर्मदा तट पर विश्राम और तप करते थे। यही नही आर्यावर्त अथवा उत्तर के राजा भी तपस्वियों के दर्शन और पुण्यः लाभ हेतु नर्मदा के तट पर पहुंचते थे।

वीर मित्रोदय[15] के तीर्थ प्रकाश खंड में नर्मदा को गंगा के समकक्ष महत्व दिया है। भारत की नदियों की महिमा बताते हुए मित्र मिश्र लिखते हैं कि सरस्वती, गंगा, यमुना, नर्मदा, विपाशा, वितस्ता, कौशकी, नन्दावरी, चंद्रभागा, सरयू, उत्प्लावती, सिंधु, अर्जुनी, पर्णाशा, शोण, ताप्ती, पारावती, पाषाण तीर्था, गोमती, गंडकी, बहुदा, रम्या, देविका, गोदावरी, कावेरी, ताम्रपर्णी, चर्मण्वती, वेत्रवती एवम चेती महानदियें पुण्यदायी और पुण्य फल देने वाली हैं।

महाकवि कालिदास का संस्कृत साहित्य में अद्वितीय स्थान है। संस्कृत साहित्य में उनकी शैली विलक्षण है, जिसकी विशेषता सरलता, सरसता और सुकुमारता है। इनकी उपमाएं और उत्प्रेक्षायें प्रायः पृकृति से चुनी गई होती हैं। विंध्यांचल और नर्मदा से लगाव उनके साहित्य में सहज ही महसूस किया जा सकता है। कालिदास ने अपने दोनों महाकाव्यों रघुवंशम एवं कुमारसंभव के साथ ही एकाकी विक्रमोर्वशीय एवं काव्य रचना मेधदूत में नर्मदा का अप्रतिम चित्रण किया है। कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में नर्मदा को चंद्रमा से उत्पन्न बताते हुए कहा है कि अति सुंदर और अस्त्र विद्या के ज्ञाता युवराज अज ने गंधर्व प्रियंबद की बात को स्वीकार कर लिया और चंद्रमा से उत्पन्न हुई नर्मदा के पवित्र जल का आचमन करके शाप से मुक्त हुए और उस गंधर्व से मंत्र सहित अस्त्र ले लिया अर्थात सीख लिया। महाकवि कालिदास लिखते हैं कि विदर्भ देश के राजा भोजने महाराज रघु के पास अपना दूत भेजकर अपनी बहन इंदुमती के स्वयंबर में अज को आमंत्रित किया।[16] रघु की आज्ञानुसार अज सेना समेत विदर्भ के लिए रवाना हुए। रास्ते में उनकी सेना ने नर्मदा किनारे पड़ाव डाला। नर्मदा के तट पर जहां करंज के वृक्ष जल की बूंदों से युक्त ठंडी वायु से हिल रहे थे। उस सुरम्य स्थल पर अज ने अपनी थकी हुई सेना को विश्राम का आदेश दिया। कुछ समय पश्चात उन्होंने देखा कि नमर्दा के जल से एक जंगली हाथी निकला और लताओं को अपने वक्ष स्थल से खींचता हुआ पीछे के तट पर पहुंचा। उस जंगली हाथी के गंडस्थलों से जो मद टपक रहा था, वह नर्मदा के जल में डुबकी लगाने से एक क्षण के लिए बंद हो गया था लेकिन उसके दांतो पर दिखाई दे रही नीली रेखाएं बता रही थी कि वह ऋक्षवान पर्वत के तटों पर दांतो से मिट्टी खोदता रहा है। जैसे ही वह बाहर निकला और उसने अज की सेना के हाथियों को देखा उसका मद पुनः बरसने लगा (क्रोध से मदमस्त हो गया)। उसकी तीव्र गन्ध से आज की सेना के हाथी बंधन तोड़ कर भागने लगे। चारों ओर कोलाहल मच गया। अज जानता था कि शास्त्रों में हाथी की हत्या वर्जित है इसलिए उसने हाथी को रोकने के उद्देश्य से बाण चलाया। अज का तीर लगते ही वह हाथी दिव्य कांति वाले देवरूप में प्रकट हो गया। उसने अज को प्रणाम कर बताया कि वह प्रियंबद नाम का गंधर्व है जो मतंग ऋषि के श्राप से हाथी हो गया था। मतंग ऋषि ने कहा था कि जब इच्छवाकु वंश में उत्पन्न अज अपने बाण से गंदभेदन करेंगे तब तुम श्राप मुक्त होगे। इस कथा में कालिदास ने नर्मदा, उसके तट और जल का बहुत ही भावपूर्ण चित्रण किया है[17]।

सौ से तीन सौ ईस्वी के दौरान लिखी गई वैष्णव धर्मशास्त्र विष्णु संहिता अथवा विष्णु धर्म सूत्र के कल्प खंड में नर्मदा नदी के तट और समीप स्थित सभी तीर्थों को श्राद्ध योग्य बताते हुए कहा गया है 'यत्र क्वचन नर्मदा तीरे'[18] अर्थात नर्मदा का समूचा तट पुण्यक्षेत्र है। 'अमरकण्टके' अर्थात समूचा अमरकण्टक क्षेत्र। अमरकण्टक पर्वत और नर्मदा के तट पर कही भी श्राद्ध किया जा सकता है। इस धर्म सूत्र में अमरकण्टके और नर्मदा का नाम प्रारम्भ में ही पुष्कर के बाद दिया गया है। अन्य सभी तीर्थों और पुण्यमयी नदियों का नाम नर्मदा के बाद है। यहां श्राद्ध का अक्षय फल प्राप्त होता है। इस प्राचीन ब्राह्मण ग्रंथ में नर्मदा को रुद्र के शरीर से उत्पन्न बताया गया है। सूत्र में कहा गया है कि नर्मदा अमरकण्टक से निकली है जो शिव और पार्वती की निवास स्थली है।

ऐतिहासिक महाकाव्य संस्कृति साहित्य के प्रथम ग्यारहवीं सदी के प्राचीन संस्कृत ग्रंथ नवसाहसांगचरितं में नर्मदा के धार्मिक पक्ष के साथ उसके सौंदर्य का भी उत्कृष्ट शैली में वर्णन किया गया है। संस्कृत विद्वान परिमल गुप्त द्वारा लिखित इस ग्रंथ को संस्कृत साहित्य का प्रथम ऐतिहासिक महाकाव्य माना जाता है। नवसहसांक चरितम् में नर्मदा पर एक अध्याय लिखा गया है। इस ग्रंथ में नर्मदा प्रवेश विषय पर परिमल गुप्त लिखते है :–

अक्षिप्तत्तटशिलाविटंकतः पार्थिव स्वमथ नर्मदाम्भसि।
वारीधेरू पयसि विश्वदीपैकरू सायमद्रिशिखरादिवार्यमा[19]।।

नागलोकावतारो नाम अध्याय में परिमल गुप्त ने नर्मदा के चरित्र का उल्लेख करते हुए आगे लिखा है कि जिस नर्मदा के जल के स्पर्श से साधारण मनुष्य पत्थर (अश्म) से बन जाते हैं, उस कठिन और दुस्तर नर्मदा को सिंधुराज ने सहजता से पार कर लिया। नर्मदा को एक कठिन सरिता बताते हुए परिमल गुप्त लिखते हैं कि नर्मदा को पार कर पाना किसी भी सामान्य मनुष्य के लिए सहज नही है। नर्मदा एक दुर्गम सरिता है और इसे पर कर लेने के भ्रम में जो अविवेकी लोग इसमें (नर्मदा में) कूदते हैं, वे नदी से बाहर नही निकल पाते। इसे सिंधुराज के समान कुशल और साहसी तैराक तथा विवेकवान लोग ही पार कर सकते हैं।

रामचरित मानस में भी महाविद्वान तुलसीदास ने समय–समय पर नर्मदा को याद किया है।[20] बालकाण्ड के एक दोहे में तुलसीदास कहते हैं कि जिस प्रकार सम्पूर्ण सिद्धियों, सुख–संपत्तियों को देने वाली नर्मदा महादेव को विशेष प्रिय है, उसी तरह उन्हें राम की सुंदर कथा भी महादेव जी को विशेष प्रिय है। यहां गोस्वामी तुलसीदास जी का इशारा है कि जिस तरह राम कथा भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है उसी तरह नर्मदा भी भारतीय संस्कृति

का एक अक्षय श्रोत है।
इसी तरह जब वनवास काल मे श्री राम चित्रकूट पहुंचते है[21] और वहां अपना निवास बनाते हैं तो वहां का कण–कण पवित्र हो जाता है। मन्दाकिनी का भाग्य देखते ही बनता है। यही नही गोदावरी, मेकलसुता, आदि सभी नदियाँ भी स्वयं को भाग्यशाली समझती हैं, धन्य हो जाती हैं।
संस्कृत ग्रंथ कन्काल मालिनी तंत्र में वर्णित गुरु गीता उपदेश[22] के दौरान महादेव शिव ने भी नर्मदा समेत भारतवर्ष की कुछ प्रमुख नदियों को देवी भगवती का स्वरूप बताया है। एक अध्याय में पार्वती जी महादेव से कहती हैं कि हे प्रभू कृपया आप मुझे गुरु गीता का उपदेश दें। पार्वती जी के अनुरोध पर शिव उन्हें गीता उपदेश देते हैं। इस दौरान वे नदियों के सम्बंध में कहते हैं ...

'त्वमेव गुरु रूपेण लोकानां त्राणकारिणी।
गया गंगा काशिका च त्वमेव सकलं जगत।।
कावेरी यमुना रेवा करतोया सरस्वती।
चंद्रभागा गोमती च त्वमेव कुलपालिका'[23]।।

अर्थात .....
हे देवि! तुम ही गुरु के रूप में सम्पूर्ण जगत का त्राण करती हो। गंगा, गया, काशी, कावेरी, नर्मदा, करतोया, सरस्वती, चंद्रभागा एवं गौतमी रूप से तुम ही समस्त कुलों की पालिका भी हो। पालन करने वाली हो।
विश्व के प्रथम समानांतर कोष (थेसॉरस) 'अमर कोष'[24] में भी नर्मदा का उल्लेख मिलता है। अमरकोश की रचना चौथी शताब्दी में चंद्रगुप्त द्वितीय के नव रत्न अमर सिंह ने की थी। अमर सिंह लिखते है.....'रेवा तू नर्मदा सोमोद्भवा मेकले कन्या'।
आदि शंकराचार्य ने भी नर्मदा के देवी स्वरूप को स्वीकारते हुए नर्मदा अष्टक एवं नर्मदा लहरी जैसे स्रोतों की रचना की। पांच सौ ईसवी में रचित ये स्रोत आज भी नर्मदा भक्तों के लिए आराधना का प्रमुख स्त्रोत या मंत्र माने जाते हैं। नर्मदा पूजन अथवा नर्मदा तट पर कोई भी धार्मिक आयोजन नर्मदाष्टक के बिना पूर्ण नहीं होता। हालांकि आदि शंकराचार्य के बाद भी परवर्ती विद्वानों ने अपनी शैली में नर्मदा अष्टक, नर्मदा आराधना के स्त्रोत अथवा विभिन्न श्लोकों की रचना की है लेकिन मूल नर्मदा अष्टक आदि शंकराचार्य द्वारा विरचित नर्मदाष्टक को ही माना जाता है। शंकराचार्य ने नौ प्रमुख श्लोकों में नर्मदा के उद्गम, इतिहास, सौंदर्य एवं महत्व आदि सभी पक्षों को शामिल करते हुए देवी नर्मदा की भावपूर्ण आराधना की है। शिवस्वरूप श शंकरश के अनुसार नर्मदा पृथ्वी के पाप हरने वाली, शत्रुओं को ललकारने वाली, भव सिंधु के दुखों से बचाने वाली, काल रूप यमदूतो के भय को हरने वाली, सभी तरह से मनुष्य की रक्षा करने वाली, पाप हरने वाली और प्राणी मात्र को सुख देने वाली है। नर्मदा अष्टक का पाठ करने मात्र से मनुष्य पुनर्जन्म रहित होकर शिव धाम को प्राप्त होता है।
'जो मनुष्य इस नर्मदाष्टक का तीनों समय (प्रातः–अपरान्ह–संध्या) पाठ करते हैं वे कभी भी दुर्गति को प्राप्त नहीं होते। अर्थात उनका पुनर्जन्म नही होता है और वे रौरव नाम नरक नहीं देखते। यही नही अन्य प्राणियों के लिए दुर्लभ मनुष्य देह (रूप) भी उन्हें सुलभ होता है और वे शिवलोक में रहने का गौरव प्राप्त करते हैं।'[25] नर्मदाष्टक के ही एक अन्य श्लोक में तो शंकराचार्य ने नर्मदा महत्व बताते हुए यहां तक लिखा है कि त्रिदेव–विष्णु, शंकर और ब्रह्मा को भी उनकी शक्ति नर्मदा से प्राप्त होती है।
'ब्रह्मा–विष्णु और महेश को निज–निज पद अर्थात अपनी–अपनी शक्ति देने वाली हे देवी नर्मदा, अगणित दृष्ट–अदृष्ट लाखों पापों का लक्ष्य भेद करने में अमोघ शस्त्र के समान और तट पर बसने वाली छोटी–बड़ी सभी जीव परंपरा को भोग और मोक्ष देने वाले तुम्हारे पाद पंकजों (चरणों) को मैं प्रणाम करता हूं।'[26]
आदि शंकराचार्य ने अपनी एक और रचना नर्मदा लहरी में भी नर्मदा के देवी स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखा है कि हे देवि नर्मदा! तुम ही हरिद्वार हो, तुम ही अयोध्या रूपिणी हो, तुम ही कृष्ण जन्मभूमि मथुरा हो, महादेव की नगरी काशी, अवंती और कांची भी तुम ही हो। शंकर की आनंदस्वरूपिणी नर्मदा तुम ही गंगा, तापी, यमुना और ब्रह्म कन्या हो और तीर्थराज प्रयाग भी तुम्हारा ही स्वरूप है। नर्मदा की शक्ति का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं कि तुम्हारे अति वेगशाली जल प्रवाह, निर्भय होकर गगन स्पर्शी उत्तुंग तरंगों के आघात से तट पर स्थित विशाल वृक्षों को मूल से उखाड़ते हुए चलते हैं। त्रिपुरारी शंकर से उत्पन्न होने के कारण अनंत गुणों से भरपूर हो तुम ही एक ऐसी नदी हो जो का करुणार्दचित्त होकर मनुष्यों को परम पद प्रदान करने में समर्थ हो।
नर्मदा पर साहित्य सृजन की परंपरा अनवरत रूप से आगे बढ़ती रही और एक तरफ जहां नर्मदा ऋषियो और विद्वानों के लिए शोध और साहित्य सृजन का प्रमुख विषय बनी रही वही इसका दैवी स्वरूप सामान्य जन से लेकर राजघरानो तक पहुंच गया। 1857 ईस्वी में बघेलखंड के साहित्य प्रेमी महाराजा रघुराज सिंह ने भी देवी नर्मदा की आराधना हेतु नर्मदाष्टक की रचना की। रघुराज सिंह ने नर्मदा को मेकल तनया एवं शिव स्वरूपा के नाम से संबोधित किया है।[27] उन्होंने अपने स्त्रोत में नर्मदा के सौंदर्य का वर्णन करते हुए तटवर्ती क्षेत्रों में पाए जाने वाले वृक्षो एवं जीव–जंतुओं के बारे में भी सुंदर चित्रण किया है। रघुराज सिंह रचित नर्मदाष्टकं का श्लोक कहता है....

शिव स्वरूप दायिके सरिद्गणस्य नाइके,
सुवांछितार्थ धाइके ह्रमायिके सुकायिके।
सुमानसस्य कायिकस्य वाचिकस्य पाप्मनः,
प्रहारिके त्रितापहे नमामि देवि नर्मदे[28]।।

अर्थात .....'शिव की भांति सुंदर रूप प्रदान करने वाली, सभी सरिताओं की नायिका, वांछित अर्थ देने वाली (मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली) माया से रहित, सुंदर स्वरूप वाली, मन वचन कर्म के पापों को प्रगष्ट करने वाली तथा तीनों प्रकार के तापों का हरण करने (सभी कष्टों को दूर करने) वाली हे देवी नर्मदे! मैं आपको प्रणाम करता हूं।'

निष्कर्ष

निष्कर्षतः संस्कृत और प्राकृत भाषा में लिखे गए भारत के प्राचीन साहित्य में नर्मदा को यथोचित स्थान मिला है। आर्यो की निवास स्थली सप्त सैन्धव से दूर दक्षिण में विध्यांचल एवं सतपुडा पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य में प्रवाहित होने के बावजूद नर्मदा की यश पताका लहराती रही। जैसे जैसे आर्यों का प्रभाव दक्षिण की तरफ बढ़ा नर्मदा की लोकप्रियता भी बढ़ती गई। विशाल विंध्य पर्वत के ऊंचे शिखरो पर निर्मित प्राचीन कन्दराएँ और स्वच्छ जलयुक्त नर्मदा का तट, ऋषियों और तपस्वियों को भाने लगा और समूचा नर्मदा अंचल एक तीर्थ क्षेत्र में परिवर्तित हो गया। कभी ना सूखने वाली अक्षया नर्मदा और सघन वन में उपलब्ध औषधीय वनस्पतियो ने यहां जीवन सुलभ वातावरण बना दिया। अमरकण्टक से लेकर नर्मदा घाटी के प्रमुख स्थलों में ऋषियों के आश्रम सहज ही नर्मदा के स्वर्णीयम इतिहास की पुष्टि करते हैं। यही वजह है कि नर्मदा को साहित्य में स्थान मिला अपितु कई प्रमुख ग्रंथों की रचना भी नर्मदा तट पर की गई। धार्मिक ग्रंथों से शुरू हुआ नर्मदा का यशोगान विद्वानों से लेकर सामान्य जनो को आकर्षित करता रहा और अनवरत रूप से नर्मदा पर साहित्य

सृजन होता रहा।

सन्दर्भ

1. ऋग्वेद 8/24/27
2. शतपथ ब्राम्हण 12/9/3/1
3. नर्मदा परिक्रमा, गोंड़ी पब्लिक ट्रस्ट मण्डला, रामप्रसाद पाठक पृष्ठ–प्टए ट
4. स्कन्द पुराण, गीताप्रेस पृष्ठ–898
5. अथर्व वेद 11/7/2
6. शतपथ ब्राह्मण 14/3/3
7. छांदोग्य उपनिशद् 7/1/2
8. बाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड श्लोक–19–23
9. बाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड पृष्ठ–364, श्लोक–26
10. बाल्मीकि रामायण सर्ग–31, श्लोक–31/33
11. बाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड, सर्ग–32, श्लोक–4/5 पृष्ठ–369
12. महाभारत शान्तिपर्व 52/32
13. महाभारत वनपर्व, तीर्थयात्रा पर्व पृष्ठ–12–15
14. महाभारत भीष्म पर्व 9/14
15. वीर मित्रोदय तीर्थ प्रकाश पृष्ठ–7–8, 121
16. रघुवंशम्, मोतीलाल बनारसीदास पंचम सर्ग, श्लोक–59
17. रघुवंशम्, मोतीलाल बनारसीदास पंचम सर्ग, श्लोक–42–55
18. विष्णु धर्मसूत्र पृश्ठ–85–7
19. नव सहसांक चरितम्, पृष्ठ–133, श्लोक–38
20. नव सहसांक चरितम्, 5/58
21. रामचरित मानस, बालकाण्ड चौपाई 13, दोहा क्र.31 के पूर्व
22. रामचरित मानस, अयोध्याकाण्ड चौपाई–5, दोहा क्र.137 के पूर्व
23. कंकाल मालिनी तंत्र (भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी) पृष्ठ–20/30/31
24. अमरकोश प्रथम काण्ड, वर्ग–10, श्लोक–32
25. नर्मदाष्टकम् षंकराचार्य, श्लोक–9
26. नर्मदाष्टकम् शंकराचार्य, श्लोक–7
27. नर्मदा लहरी श्लोक–13/10
28. नर्मदाष्टक रघुराज सिंह श्लोक–8